रविवार 25 अक्टूबर, 2020

*विषय — **मृत्यु के बाद की प्रक्रिया***

स्वर्ण पाठ: 2 पतरस 2 : 9

"तो प्रभु के भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना जानता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **याकूब 1 : 2-4, 12, 16, 17, 21**

2 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो
3 तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
4 पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे॥
12 धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।
16 हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ।
17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।
21 इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **मत्ती 6: 13 (*से*:)**

13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. मत्ती 4 : 1-11

1 तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से उस की परीक्षा हो।
2 वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी।
3 तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।
4 उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।
5 तब इब्लीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया।
6 और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
7 यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।
8 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर
9 उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।
10 तब यीशु ने उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।
11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे॥

3. मत्ती 26 : 1-4, 17-20, 30-35, 56, 69-75

1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा।
2 तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्व्व होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।
3 तब महायाजक और प्रजा के पुरिनए काइफा नाम महायाजक के आंगन में इकट्ठे हुए।
4 और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें।
17 अखमीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?
18 उस ने कहा, नगर में फुलाने के पास जाकर उस से कहो, कि गुरू कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्व्व मनाऊंगा।
19 सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।
20 जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा।

30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए॥
31 तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुण्ड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो जाएंगी।
32 परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा।
33 इस पर पतरस ने उस से कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊंगा।
34 यीशु ने उस से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा।
35 पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी, मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा: और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा॥
56 परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन के पूरे हों: तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥
69 और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था: कि एक लौंड़ी ने उसके पास आकर कहा; तू भी यीशु गलीली के साथ था।
70 उस ने सब के साम्हने यह कह कर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।
71 जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।
72 उस ने शपथ खाकर फिर इन्कार किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।
73 थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उस से कहा, सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।
74 तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता; और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी।
75 तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई की मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा॥

4. भजन संहिता 51 : 1-4 (*से*:), 6, 7, 9-12, 17

1 हेपरमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
2 मुझे भलीं भांति धोकर मेरा अधर्म दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!
3 मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।
4 मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है।
6 देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

7 जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा।
9 अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले, और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल॥
10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
11 मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
12 अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल॥
17 टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता॥

5. **याकूब 4 : 7, 8, 10**

7 इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।
8 परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो।
10 प्रभु के साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 17 : 8-11

और हमें प्रलोभन में न ले जाएँ, बल्कि हमें बुराई से बचाएं;
और परमेश्वर हमें प्रलोभन में नहीं ले जाता है, बल्कि हमें पाप, बीमारी और मृत्यु से बचाता है।

2. 6 : 3-5, 23-24

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है।

यीशु ने उसे बाहर निकालने से पहले पाप का खुलासा किया और उसे फटकार लगाई।

3. 7:1-7

गलती के लिए उसे जो एकमात्र सजा थी, वह थी, "हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो।" जीसस का तिरस्कार तेज और गहन था, इसका मजबूत प्रमाण उनके स्वयं के शब्दों में मिलता है, — इस तरह के जबरन बोलने की

आवश्यकता को दिखाते हुए, जब उसने शैतानों को बाहर निकाला और बीमार और पापी को चंगा किया। त्रुटि का निवारण उसके झूठे दावों की भौतिक भावना से वंचित करता है।

4. 22 : 3-10

पाप और क्षमा, स्वार्थ और कामुकता की आशा के बीच एक पेंडुलम की तरह कंपन, निरंतर प्रतिगमन का कारण बनता है, — हमारी नैतिक प्रगति धीमी होगी। मसीह की माँग के प्रति जागते हुए, नश्वर दुख का अनुभव करते हैं। यह उनके कारण होता है, यहां तक कि डूबने वाले पुरुषों के रूप में, खुद को बचाने के लिए जोरदार प्रयास करना; और मसीह के अनमोल प्रेम के माध्यम से इन प्रयासों को सफलता मिली।

5. 290 : 16-22

यदि मृत्यु नामक परिवर्तन पाप, बीमारी और मृत्यु में विश्वास को नष्ट कर देता है, तो विघटन के क्षण में खुशी जीत जाएगी, और हमेशा के लिए स्थायी हो जाएगी; लेकिन यह ऐसा नहीं है। पूर्णता से ही पूर्णता प्राप्त होती है। जो लोग अधर्मी हैं वे अभी भी अधर्मी होंगे, जब तक कि दिव्य विज्ञान में क्राइस्ट, सत्य, सभी अज्ञान और पाप को हटा नहीं देते हैं।

6. 291 : 1-18, 28-32

अधर्म को छोड़ते समय जिन पापों को क्षमा किया जाता है, वह खुशी पाप के बीच में वास्तविक हो सकती है, कि शरीर की तथाकथित मौत पाप से मुक्त हो जाती है, और यह कि भगवान का क्षमा याचना है लेकिन पाप का विनाश, - ये गंभीर गलतियाँ हैं । हम जानते हैं कि सब बदल जाएगा "एक पल में," जब आखिरी तुरही ध्वनि होगी; लेकिन ज्ञान का यह अंतिम निमंत्रण तब तक नहीं आ सकता जब तक कि ईसाई चरित्र की वृद्धि में प्रत्येक कम आमंत्रण के लिए नश्वर न हो गए हों। मनुष्यों को यह कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है कि मृत्यु के अनुभव में विश्वास उन्हें महिमा प्रदान करेगा।

सार्वभौमिक मुक्ति प्रगति और परिवीक्षा पर टिकी हुई है, और उनके बिना अप्राप्य है। स्वर्ग एक स्थानीयता नहीं है, बल्कि मन की एक दिव्य स्थिति है जिसमें मन की सभी अभिव्यक्तियाँ सामंजस्यपूर्ण और अमर हैं, क्योंकि पाप नहीं है और मनुष्य अपने स्वयं के धार्मिकता नहीं पा रहा है, लेकिन "प्रभु के मन" , "जैसा कि शास्त्र कहता है।

कोई भी अंतिम निर्णय नश्वर की प्रतीक्षा नहीं करता है, क्योंकि ज्ञान का निर्णय दिन प्रति घंटा और लगातार आता है, यहां तक कि वह निर्णय जिसके द्वारा नश्वर मनुष्य को सभी भौतिक त्रुटि से विभाजित किया जाता है। आध्यात्मिक त्रुटि के लिए कोई नहीं है।

7. 289 : 2-4

नश्वर मनुष्य कभी भी त्रुटि, पाप, बीमारी, और मृत्यु में विश्वास की लौकिक दुर्बलता से नहीं उठ सकता, जब तक कि वह यह न जान ले कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है।

8. 542 : 1-13

मामले में जीवन का विश्वास हर कदम पर पाप करता है। यह ईश्वरीय नाराजगी को जन्म देता है, और यह यीशु को मार देगा कि वह परेशानी से छुटकारा दिला सकता है। भौतिक मान्यताएँ जब भी और जहाँ भी दिखाई देती हैं, आध्यात्मिक विचार को मार डालती हैं। यद्यपि त्रुटि एक झूठ के पीछे छिपती है और अपराधबोध का बहाना करती है, लेकिन त्रुटि को हमेशा के लिए छुपाया नहीं जा सकता। सत्य, उसके अनन्त कानूनों के माध्यम से, त्रुटि का खुलासा करता है। सत्य पाप को धोखा देने का कारण बनता है, और त्रुटि को जानवर के निशान पर सेट करता है। यहां तक कि अपराध को छुड़ाने के लिए या उसे छुपाने के लिए सजा दी जाती है। न्याय से बचना और सच्चाई को नकारना पाप को खत्म करने, अपराध को खत्म करने, आत्म-नियंत्रण को खतरे में डालने और ईश्वरीय दया का मजाक उड़ाने के लिए है।

9. 405 : 5-11, 22-32

क्रिश्चियन साइंस मनुष्य को भविष्यवाणियों में महारत हासिल करने के लिए आज्ञा देता है, - दया के साथ घृणा करने के लिए, शुद्धता के साथ वासना को जीतने के लिए, दान के साथ बदला लेने के लिए, और ईमानदारी के साथ धोखे को दूर करने के लिए। यदि आप स्वास्थ्य, खुशी और सफलता के खिलाफ षड्यंत्रकारियों की एक सेना को संजोना नहीं चाहते हैं, तो इन त्रुटियों को उनके शुरुआती चरणों में नष्ट कर दें।

दोषी विवेक के संचयी प्रभावों को सहन करने की तुलना में पृथ्वी पर हर संक्रमण के संपर्क में आना बेहतर था। गलत करने वाले की सचेत चेतना सही करने की क्षमता को नष्ट कर देती है। यदि पाप पछतावा नहीं है और कम नहीं हो रहा है, तो यह शारीरिक और नैतिक कयामत पर जल्दबाजी है। आपको उन नैतिक दंडों से विजय प्राप्त होती है जिन्हें आप प्राप्त करते हैं और जो वे लाते हैं। पाप-बोध के दर्द उसके सुख से कम हानिकारक नहीं हैं। भौतिक दुखों में विश्वास करने से मनुष्य को अपनी त्रुटि से पीछे हटना पड़ता है, शरीर से आत्मा की ओर भागना पड़ता है, और स्वयं के बाहर दिव्य स्रोतों से अपील करना पड़ता है।

10. 201 : 9-2

सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो जाती हैं।" जुनून, स्वार्थ, झूठी भूख, घृणा, भय, सभी कामुकता, आध्यात्मिकता के लिए उपज, और होने का अतिरेक ईश्वर की तरफ है , अच्छा।

हम पहले से भरे हुए बर्तन नहीं भर सकते। उन्हें पहले खाली किया जाना चाहिए। त्रुटि को अस्वीकार करें। फिर, जब ईश्वर की हवाएँ बहेंगी, तो हम अपने तंतुओं को हमारे करीब नहीं लाएँगे।

नश्वर मन से त्रुटि निकालने का तरीका प्रेम के बाढ़-ज्वार के माध्यम से सच्चाई में डालना है। ईसाई पूर्णता किसी अन्य आधार पर नहीं जीती जाती।

अपवित्रता पर पवित्रता का अभिवादन करते हुए, यह कहते हुए कि पाप को क्षमा किया जा सकता है जब यह त्याग नहीं किया जाता है, यह ऊंटों को निगलने जैसी मूर्खता है।

11. 202 : 6-23

अगर पुरुषों को विज्ञान के मन पर आधा विश्वास करना होगा, तो वे तथाकथित ज्ञान और भौतिक अर्थों के सुखों पर विश्वास करेंगे, t वे बुरे से बुरे की ओर नहीं जाते, जब तक कि जेल और मचान से अनुशासित न हों; लेकिन पूरे मानव परिवार को मसीह के गुणों के माध्यम से भुनाया जाएगा, — सत्य की धारणा और स्वीकृति के माध्यम से। इस शानदार परिणाम के लिए क्रिश्चियन साइंस आध्यात्मिक समझ की मशाल जलाता है।

इस विज्ञान के बिना सब परिवर्तनशील है; लेकिन अमर मनुष्य, अपने ईश्वर के दिव्य सिद्धांत के अनुसार, न तो पाप करता है, न ही पीड़ित होता है, न ही मरता है। जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आएगा, तो हमारी तीर्थयात्रा के दिन कम हो जाएंगे; क्योंकि सच्चा मार्ग मृत्यु के बदले जीवन की ओर ले जाता है, और सांसारिक अनुभव त्रुटि की सत्यता और सत्य की अनंत क्षमताओं को प्रकट करता है, जिसमें परमेश्वर मनुष्य को सारी पृथ्वी पर प्रभुत्व प्रदान करता है।

12. 267 : 25-32

आत्मा के कपड़े मसीह की छाप की तरह "सफेद और चमकदार" हैं। इसलिए, यहां तक कि इस दुनिया में, "तुम्हारा वस्त्र सदभाव रहो" "धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर [विजयी] रहता है; क्योंकि वह खरा निकल कर [वफादार साबित होने से], जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करने वालों को दी है।" (याकूब 1:12.)

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6